e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 7, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

International Journal Of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

सल्तनत कालीन जीवन शैली और संस्कृति का ऐतिहासिक स्वरूप

Devendar Kumar

M.A, Department of History, NET, Bhalikhal (Dhorimana), Barmer, Rajasthan, India

सार: भारत में तुर्क आक्रमण के पश्चात दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने भारत में एक नवीन धर्म को समाज में जड़े जमाने के अवसर प्रदान किए। यह नवीन धर्म इस्लाम था। इस्लाम की अपेक्षित नवीन और परिष्कृत पद्धति और राजनीतिक संरक्षण ने भारत में इस्लाम धर्म को तेजी से फलने फूलने का अवसर प्रदान किया। इसने पारंपरिक हिंदू धर्म में अधिकारों से वंचित वर्ग को अपनी ओर आकर्षित कियाए और इस वर्ग ने अपनी वर्तमान अधिकार विहीन अवस्था से ऊपर उठने के लिए इस्लाम को अपनाने लगे। अतः इस्लाम की इस नवीन चुनौती से सामना करने के लिए भारत में हिंदू धर्म में सुधारात्मक आंदोलन की शुरुआत होती है, जिसे संपूर्ण मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है। यद्यपि भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत से होती है किंतु इसे अधिक लोकप्रियता सल्तनत काल के भारत में मिलती है। जब संपूर्ण भारत के विभिन्न प्रदेशों से उच्च श्रेणी के संतों का प्रादुर्भाव होता है। इन संतों ने ना केवल लोकवाणी में साहित्य का सृजन किया बल्कि अनेक कविताओं और पदों की रचना भी की, जो आगे चलकर स्थानीय भाषा के संरक्षण और संवर्धन में मील का पत्थर साबित हुई। हिंदू धर्म को एक बार फिर जन-जन का धर्म बनाने का प्रयास कियाए उन्होंने हिंदू धर्म में फैली रूढ़ीवादी मानसिकता के खिलाफ आवाज उठाईए साथ ही हिंदू-मुस्लिम एकता पर भी बल दिया। इस्लाम की कट्टरवादी सोच के विरुद्ध इस्लाम के भीतर से ही एक नवीन आंदोलन की शुरुआत होती है, जिसे सूफी आंदोलन कहते हैं। सूफी आंदोलन में तत्कालीन भारतीय समाज के निम्नतम तबके को अपनी ओर आकर्षित किया जो तत्कालीन सामाजिक आर्थिक राजनीतिक समस्याओं से जूझ रहा था। एक और जहां आम जन धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक सत्ता की दम घोटू पकड़, और सामाजिक बदलाव से परेशान थे, वही सूफी खानकाहे आम जनता को प्यार, और सामाजिक समरसता का संदेश दे रहीं थीं।

I. परिचय

सल्तनत काल में भारत में विभिन्न धर्म और उनसे संबद्ध अनेक संप्रदाय विद्यमान थे सबसे प्राचीन वैदिक धर्म (हिंदू) के वैष्णव, शैव, शाक्त तथा तांत्रिक संप्रदाय संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध थे। इनमें वैष्णव और शैव संप्रदायाओं की संख्या बहुत अधिक थी। बौद्ध धर्म भी प्रचलित था किंतु धीरे-धीरे उसकी संख्या में कमी होती जा रही थी। जैन धर्म का फैलाव लगभग सारे उत्तर भारत में था परंतु उसके मानने वालों की अधिक संख्या राजस्थान गुजरात और मध्यप्रदेश के मालवा में ही थी। सल्तनत काल में हिंदू धर्म के बाद इस्लाम धर्म का स्थान हो गया था। मुसलमान में भी सुन्नी और शिया दो प्रमुख संप्रदाय थे। वैसे तो सैकड़ों वर्ष पहले से ही भारत में विदेशी आक्रमण होते आ रहे थे। जितने भी आक्रमणकारी भारत में आए, वे भारत के विराट समाज का हिस्सा बन गए और उन्होंने अपनी पहचान को भारतीय धर्म में ही विलीन कर लिया। किंतु इस्लाम के उदय के पश्चात मध्य एशिया से आने वाले आक्रमणकारियों के पास एक नवीन धर्म का उत्साह था जो हिंदू धर्म के जातिवादी और बहुदेववादी विश्वास से अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत और एकेश्वरवाद में विश्वास करता था जो तत्कालीन हिंदू धार्मिक समूह के लिए एक गंभीर चुनौती थी, जिसके फलस्वरूप भारत में तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप हिंदू धर्म में सुधारात्मक आंदोलन के रूप में भक्ति आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ। वही इस्लाम की कट्टर रूढ़िवादिता के विरुद्ध इस्लाम धर्म में ही एक नवीन आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ जिसे हम सूफी आंदोलन कहते हैं, जो कि भारत के अनेक धर्मों के आचार विचारों से प्रभावित हुआ साथ ही उसने इस्लाम को अधिक उदार और आमजन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

हिंदू धर्म और समाज में जब भी अपनी भीतरी समस्या और बाहरी संकट उत्पन्न हुआ तब प्रतिक्रिया स्वरुप धर्म सुधार आंदोलन या क्रांतियां हुई। धर्म और समाज को सुधारने के लिए प्राचीन काल में जैन और बौद्ध आंदोलन हुए जिन्होंने बाद में धर्म का रूप धारण कर लिया। इसी तरह से मध्यकाल में भक्ति परंपरा के रूप में धार्मिक पुनर्जागरण की शुरुआत होती है धार्मिक सामाजिक भेदभाव के फलस्वरूप उत्पन्न हुए धार्मिक आंदोलनों ने हिंदू धर्म और समाज में धर्म को एक नए तत्व के साथ उपस्थित किया, जो अपनी नई शक्ति और नवजीवन का संचार करके उसे अधिक सहिष्णु बनने में मदद की। राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए भक्ति आंदोलन भारतीय संस्कृति की एक महान घटना थी।[1,2,3]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

भक्ति मार्ग उत्पत्ति और विकास

भारत में भक्ति परंपरा की शुरुआत दक्षिण भारत में आठवीं नौवीं शताब्दी में अलवार(वैष्णव) और नयनार(शैव) संतों ने की थी वैसे भारत में मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग के रूप में कर्मकांड और ज्ञान के साथ ही भक्ति का सिद्धांत भी बहुत प्राचीन है। उपनिषदों, भगवत गीता, आदि में भक्ति के अस्तित्व को देखा जा सकता है। भगवत गीता में कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ इसका अर्थ ही यही हुआ कि मेरी भक्ति करो।

अतः कहा जा सकता है कि मोक्ष प्राप्ति भारतीय संस्कृति के मूल प्रवृत्ति में से एक है। भक्ति का प्रतिपादन प्राचीन भारतीय साहित्य से हुआ है परंतु मोक्ष प्राप्ति और एक अच्छे इंसान बनने के साधन के रूप में भक्ति का व्यापक प्रयोग मध्ययुगीन भारत की प्रमुख विशेषता है। दक्षिण के अलवार भक्तों की भक्ति गीतों तमिल प्रबन्धम में भक्ति का स्वरूप स्पष्ट रूप से निकलकर सामने आता है। रामानुज, माधव एवं ज्ञानेश्वर आदि संतों की वाणी से दक्षिण भारत तथा महाराष्ट्र तक भक्ति मार्ग का विकास होता है बाद में उत्तर भारत में रामानंद, कबीर, नानक, तुलसी, सूर चैतन्य एवं दादू जैसे प्रसिद्ध संतो ने इसे संपूर्ण उत्तर भारत में लोकप्रिय बना दिया।

II. विचार-विमर्श

भक्ति मार्ग की उत्पत्ति के कारण

1. **हिंदू धर्म का रूढ़िवादी स्वरूप**

मध्यकाल में वैदिक धर्म अधिक जटिल हो गया था। धर्म के क्षेत्रों में कर्मकांड का महत्व बढ़ गया था। पूजा-पाठ की प्रकिया अत्यधिक कठिन थी औपचारिकताओं वाह्य आडंबरो ने हिंदू धर्म की विशेषताओं पर कठोर आघात किया था। जिससे आम जनता से हिंदू धर्म दूर हो गया था, इन परिस्थितियों भक्ति मार्ग ने समाज के दबे कुचले वर्ग को भी ईश्वर की प्राप्ति का सरलतम मार्ग बताया।

2. **तुर्क आक्रमणकारियों द्वारा मंदिरों और मूर्तियों का विनाश**

मध्य कालीन तर्क अक्रमणकारियो ने मंदिरों को लूटा उन्होंने पवित्र स्थलों को अपवित्र किया। मूर्तियों को नुकसान पहुंचाया। अतः मूर्ति पूजा के स्थान पर हिंदू धर्मावलंबियों को भक्ति और उपासना का मार्ग श्रेष्ठ लगा ।

3. **हिंदुओं में भेदभाव की भावना**

मध्यकाल में हिंदू धर्म, निम्न जातियों के लिए अपेक्षाकृत कठोर होता जा रहा था, जिससे निम्न जातियों में असंतोष बढ़ता जा रहा था। अतः भक्ति मार्ग के इन संतों ने ऊंच-नीच का विरोध किया जिससे प्रेरित होकर अछूतों और निम्न वर्ग के लोगों ने भक्ति मार्ग का स्वागत किया अब यह एक ऐसा मार्ग था जिसमें बाहरी आडंबरो का विरोध था, साथ ही मनुष्य की समानता पर बल था।

4. **हिंदुओं की पलायन प्रवत्ति[4,5,6]**

तुर्क आक्रमणकारियों से हिंदू राजाओं की पराजय ने हिंदुओं के दिल हताशा से भर गए। फलस्वरूप अपने कष्टों से मुक्ति के लिए वे भगवान की भक्ति में लीन हो गए।

5. **इस्लाम का प्रभाव**

भारत में इस्लाम के आगमन ने हिंदू धर्म को गंभीर चुनौती दी। इस्लाम सादगी, सरलता, जाति व्यवस्था के विरोध ने हिंदू धर्म के अनुयाइयों के समक्ष अपने धर्म में सुधार के लिए प्रेरित किया। अतः भक्ति आंदोलन के जोर पकड़ने का एक कारण इस्लाम से मिलती चुनौती भी थी।

6. **राजनीतिक वातावरण**

तुर्क आक्रमणकारियों के आक्रमणों से हिंदू समाज वा धर्म को गहरा धक्का लगा। समय के साथ तुर्क आक्रमणकारियों की आक्रमकता में कमी आई, वही मेवाड़, विजयनगर जैसे शक्तिशाली हिन्दू राज्य अस्तित्व में आए। इन राज्य ने भी भक्ति मार्गी संतों के लिए संरक्षण दिया।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

III. परिणाम

962 ईस्वी में दक्षिण एशिया के हिन्दू और बौद्ध साम्राज्यों के ऊपर सेना द्वारा, जो कि फारस और मध्य एशिया से आए थे, व्यापक स्तर पर हमलें होने लगे।[8] इनमें से महमूद गज़नवी ने सिंधु नदी के पूर्व में तथा यमुना नदी के पश्चिम में बसे साम्राज्यों को 997 इस्वी से 1030 इस्वी तक 17 बार लूटा।[9] महमूद गज़नवी अपने साम्राज्य को पश्चिम पंजाब तक ही बढ़ा सका।[10][11]

[12] परंतु वो भारत में स्थायी इस्लामिक शासन स्थापित न कर सके। इसके बाद गोर वंश के सुल्तान मोहम्मद ग़ौरी ने उत्तर भारत पर योजनाबद्ध तरीके से हमले करना आरम्भ किया।[13] उसने अपने उद्देश्य के तहत इस्लामिक शासन को बढ़ाना शुरू किया।[9][14] गोरी एक सुन्नी मुसलमान था, जिसने अपने साम्राज्य को पूर्वी सिंधु नदी तक बढ़ाया और सल्तनत काल की नीव डाली।[9] कुछ ऐतेहासिक ग्रंथों में सल्तनत काल को 1192-1526 (334 वर्ष) तक बताया गया है।[15]

1206 में गोरी की हत्या कर दी गई।[16] गोरी की हत्या के बाद उसके एक तुर्क गुलाम (या ममलूक, अरबी: مملوك) कुतुब-उद-दीन ऐबक ने सत्ता संभाली और दिल्ली का पहला सुल्तान बना।[9]

वंश
ममलूक या गुलाम (1206 - 1290)
कुतुब-उद-दीन ऐबक एक गुलाम था, जिसने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। वह मूल रूप से तुर्क था।[17] उसके गुलाम होने के कारण ही इस वंश का नाम गुलाम वंश पड़ा।[18]

ऐबक चार साल तक दिल्ली का सुल्तान बना रहा। उसकी मृत्यु के बाद 1210 इस्वी में आरामशाह ने सत्ता संभाली परन्तु उसकी हत्या इल्तुतमिश ने 1211 इस्वी में कर दी।[19] इल्तुतमिश की सत्ता अस्थायी थी और बहुत से मुस्लिम अमीरों ने उसकी सत्ता को चुनौती दी। कुछ कुतुबी अमीरों ने उसका साथ भी दिया। उसने बहुत से अपने विरोधियों का क्रूरता से दमन करके अपनी सत्ता को मजबूत किया।[20] इल्तुतमिश ने मुस्लिम शासकों से युद्ध करके मुल्तान और बंगाल पर नियंत्रण स्थापित किया, जबकि रणथम्भौर और शिवालिक की पहाड़ियों को हिन्दू शासकों से प्राप्त किया। इल्तुतमिश ने 1236 इस्वी तक शासन किया। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद दिल्ली सल्तनत के बहुत से कमजोर शासक रहे जिसमे उसकी पुत्री रजिया सुल्ताना भी शामिल है। यह क्रम गयासुद्दीन बलबन, जिसने 1266 से 1287 इस्वी तक शासन किया था, के सत्ता सँभालने[7,8,9] तक जारी रहा।[21][22] बलबन के बाद कैकूबाद ने सत्ता संभाली। उसने जलाल-उद-दीन फिरोज शाह खिलजी को अपना सेनापति बनाया। खिलजी ने कैकुबाद की हत्या कर सत्ता संभाली, जिससे गुलाम वंश का अंत हो गया।

अलई दरवाजा और कुतुबमीनार गुलाम और खिलजी वंश के दौरान बने।[23]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

गुलाम वंश के दौरान, कुतुब-उद-दीन ऐबक ने क़ुतुब मीनार और कुवत्त-ए-इस्लाम (जिसका अर्थ है इस्लाम की शक्ति) मस्जिद का निर्माण शुरू कराया, जो कि आज यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व विरासत स्थल है।[23] क़ुतुब मीनार का निर्माण कार्य इल्तुतमिश द्वारा आगे बढ़ाया और पूर्ण कराया गया।[23][24] गुलाम वंश के शासन के दौरान बहुत से अफगान और फारस के अमीरों ने भारत में शरण ली और बस गए।[25]

खिलजी (1290 -1320)
इस वंश का पहला शासक जलालुद्दीन खिलजी था। उसने 1290 इस्वी में गुलाम वंश के अंतिम शासक शम्सुद्दीन कैमुर्स की हत्या कर सत्ता प्राप्त की। उसने कैकुबाद को तुर्क, अफगान और फारस के अमीरों के इशारे पर हत्या की।

जलालुद्दीन खिलजी मूल रूप से अफगान-तुर्क मूल का था। उसने 6 वर्ष तक शासन किया। उसकी हत्या उसके भतीजे और दामाद जूना खान ने कर दी।[26] जूना खान ही बाद में अलाउद्दीन खिलजी नाम से जाना गया। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैन्य अभियान का आरम्भ कारा जागीर के सूबेदार के रूप में की, जहां से उसने मालवा (1292) और देवगिरी (1294) पर छापा मारा और भारी लूटपाट की। अपनी सत्ता पाने के बाद उसने अपने सैन्य अभियान दक्षिण भारत में भी चलाए। उसने गुजरात, मालवा, रणथम्बौर और चित्तौड़ को अपने राज्य में शामिल कर लिया।[27] उसके इस जीत का जश्न थोड़े समय तक रहा क्योंकि मंगोलों ने उत्तर-पश्चिमी सीमा से लूटमार का सिलसिला शुरू कर दिया। मंगोलों लूटमार के पश्चात वापस लौट गए और छापे मारने भी बंद कर दिए।[28]

मंगोलों के वापस लौटने के पश्चात अलाउद्दीन ने अपने सेनापति मलिक काफूर और खुसरों खान की मदद से दक्षिण भारत की ओर साम्राज्य का विस्तार प्रारंभ कर दिया और भारी मात्रा में लूट का सामान एकत्र किया।[29] उसके सेनापतियों ने लूट के सामान एकत्र किये और उस पर घनिमा (الْغَنِيمَة, युद्ध की लूट पर कर) चुकाया, जिससे खिलजी साम्राज्य को मजबूती मिली। इन लूटों में उसे वारंगल की लूट में अब तक के मानव इतिहास का सबसे बड़ा हीरा कोहिनूर भी मिला। [30]

अलाउद्दीन ने कर प्रणाली में बदलाव किए, उसने अनाज और कृषि उत्पादों पर कृषि कर 20% से बढ़ाकर 50% कर दिया। स्थानीय आधिकारी द्वारा एकत्र करों पर दलाली को खत्म किया। उसने आधिकारियों, कवियों और विद्वानों के वेतन भी काटने शुरू कर दिए।[26] उसकी इस कर नीति ने खजाने को भर दिया, जिसका उपयोग उसने अपनी सेना को मजबूत करने में किया। उसने सभी कृषि उत्पादों और माल की कीमतों के निर्धारण के लिए एक योजना भी पेश की। कौन सा माल बेचना, कौन सा नहीं उसपर भी उसका नियंत्रण था। उसने सहाना-ए-मंडी नाम से कई मंडियां भी बनवाई।[31] मुस्लिम व्यापारियों को इस मंडी का विशेष परमिट दिया जाता था और उनका इन मंडियों पर एकाधिकार भी था। जो इन मंडियों में तनाव फैलाते थे उन्हें मांस काटने जैसी कड़ी सजा मिलती थी। फसलों पर लिया जाने वाला कर सीधे राजकोष में जाता था। इसके कारण अकाल के समय उसके सैनिकों की रसद में कटौती नहीं होती थी।[26]

अलाउद्दीन अपने जीते हुए साम्राज्यों के लोगों पर क्रूरता करने के लिए भी मशहूर है। इतिहासकारों ने उसे तानाशाह तक कहा है। अलाउद्दीन को यदि उसके खिलाफ किए जाने वाले षडयंत्र का पता लग जाता था तो वह उस व्यक्ति को पूरे परिवार सहित [10,11,12]मार डालता था। 1298 में, उसके डर के कारण दिल्ली के आसपास एक दिन में 15,000 से 30,000 लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।[32]

अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात 1316 में, उसके सेनापति मलिक काफूर जिसका जन्म हिन्दू परिवार में हुआ था और बाद में इस्लाम स्वीकार किया था, ने सत्ता हथियाने का प्रयास किया परन्तु उसे अफगान और फारस के अमीरों का समर्थन नहीं मिला। मलिक काफूर मारा गया।[26] खिलजी वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन का 18 वर्षीय पुत्र कुतुबुद्दीन मुबारक शाह था। उसने 4 वर्ष तक शासन किया और खुसरों शाह द्वारा मारा गया। खुसरों शाह का शासन कुछ महीनों में समाप्त हो गया, जब गाज़ी मलिक जो कि बाद में गयासुद्दीन तुगलक कहलाया, ने उसकी 1320 इस्वी में हत्या और गद्दी पर बैठा और इस तरह खिलजी वंश का अंत तुगलक वंश का आरम्भ हुआ।[25][32]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

तुग़लक़ (1320-1414)

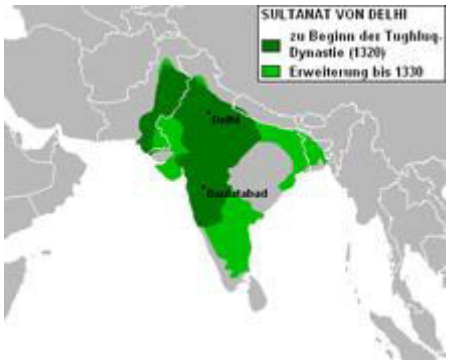

दिल्ली सल्तनत १३२०-१३३० के दौरान

तुगलक वंश ने दिल्ली पर 1320 से 1414 तक राज किया। तुगलक वंश का पहला शासक गाज़ी मलिक जिसने अपने को गयासुद्दीन तुगलक के रूप में पेश किया। वह मूल रूप तुर्क-भारतीय था, जिसके पिता तुर्क और मां हिन्दू थी। गयासुद्दीन तुगलक ने पाँच वर्षों तक शासन किया और दिल्ली के समीप एक नया नगर तुगलकाबाद बसाया।[33] कुछ इतिहासकारों जैसे विन्सेंट स्मिथ के अनुसार,[34] वह अपने पुत्र जूना खान द्वारा मारा गया, जिसने 1325 इस्वी में दिल्ली की गद्दी प्राप्त की। जूना खान ने स्वयं को मुहम्मद बिन तुगलक के पेश किया और 26 वर्षों तक दिल्ली पर शासन किया।[35] उसके शासन के दौरान दिल्ली सल्तनत का सबसे अधिक भौगोलिक क्षेत्रफल रहा, जिसमे लगभग पूरा भारतीय उपमहाद्वीप शामिल था।[36]

मुहम्मद बिन तुगलक एक विद्वान था और उसे कुरान की कुरान, फिक, कविताओं और अन्य क्षेत्रों की व्यापक जानकारियाँ थी। वह अपनें नाते-रिश्तेदारों, वजीरों पर हमेशा संदेह करता था, अपने हर शत्रु को गंभीरता से लेता था तथा कई ऐसे निर्णय लिए जिससे आर्थिक क्षेत्र में उथल-पुथल हो गया। उदाहरण के लिए, उसने चांदी के सिक्कों के स्थान पर ताम्बे के सिक्कों को ढलवाने का आदेश दिया। यह निर्णय असफल साबित हुआ क्योकि लोगों ने अपने घरों में जाली सिक्कों को ढालना शुरू कर दिया और उससे अपना जजिया कर चुकाने लगे।[34][36]

मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा ढलवाया गया ताम्बे का सिक्का

एक अन्य निर्णय के तहत उसने अपनी राजधानी दिल्ली से महाराष्ट्र के देवगिरी (इसका नाम बदलकर उसने दौलताबाद कर दिया) स्थानान्तरित कर दिया तथा दिल्ली के लोगों को दौलताबाद स्थानान्तरित होने के लिए जबरन दबाव डाला। जो स्थानांतरित हुए उनकी मार्ग में ही मृत्यु हो गई।[34] राजधानी स्थानांतरित करने का निर्णय गलत साबित हुआ क्योंकि दौलताबाद एक शुष्क स्थान था जिसके कारण वहाँ पर जनसंख्या के अनुसार पीने का पानी बहुत कम उपलब्ध था। राजधानी को फिर से दिल्ली स्थानांतरित किया गया। फिर भी, मुहम्मद बिन तुगलक के इस आदेश के कारण बड़ी संख्या में आये दिल्ली के मुसलमान दिल्ली वापस नहीं लौटे। मुस्लिमों के दिल्ली छोड़कर दक्कन जाने के कारण भारत के मध्य और दक्षिणी भागों में मुस्लिम जनसंख्या काफी बढ़ गई।[36] मुहम्मद बिन तुगलक के इस फैसले के कारण दक्कन क्षेत्र के कई हिन्दू और जैन मंदिर तोड़ दिए गए, या उन्हें अपवित्र किया गया; उदाहरण के लिए स्वंयभू शिव मंदिर तथा हजार खम्भा मंदिर।[37]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

दौलताबाद के किले का एक दृश्य

मुहम्मद बिन तुगलक के खिलाफ 1327 इस्वी से विद्रोह प्रारंभ हो गए। यह लगातार जारी रहे, जिसके कारण उसके सल्तनत का भौगोलिक क्षेत्रफल सिकुड़ता गया। [13,14,15]दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य का उदय हुआ जो कि दिल्ली सल्तनत द्वारा होने वाले आक्रमणों का मजबूती से प्रतिकार करने लगा।[38] 1337 में, मुहम्मद बिन तुगलक ने चीन पर आक्रमण करने का आदेश दिया[33] और अपनी सेनाओं को हिमालय पर्वत से गुजरने का आदेश दिया। इस यात्रा में कुछ ही सैनिक जीवित बच पाए। जीवित बच कर लौटने वाले असफल होकर लौटे।[34] उसके राज में 1329-32 के दौरान, उसके द्वारा ताम्बे के सिक्के चलाए जाने के निर्णय के कारण राजस्व को भारी क्षति हुई। उसने इस क्षति को पूर्ण करने के लिए करों में भारी वृद्धि की। 1338 में, उसके अपने भतीजे ने मालवा में बगावत कर दी, जिस पर उसने हमला किया और उसकी खाल उतार दी।[33] 1339 से, पूर्वी भागों में मुस्लिम सूबेदारों ने और दक्षिणी भागों से हिन्दू राजाओं ने बगावत का झंडा बुलंद किया और दिल्ली सल्तनत से अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। मुहम्मद बिन तुगलक के पास इन बगावतों से निपटने के लिए आवश्यक संसाधन नहीं थे, जिससे उसका सम्राज्य सिकुड़ता गया।[39] इतिहासकार वॉलफोर्ड ने लिखा है कि मुहम्मद बिन तुगलक के शासन के दौरान, भारत को सर्वाधिक अकाल झेलने पड़े, जब उसने ताम्र धातुओं के सिक्के का परिक्षण किया।[40][41] 1347 में, बहमनी साम्राज्य सल्तनत से स्वतंत्र हो गया और सल्तनत के मुकाबले दक्षिण एशिया में एक नया मुस्लिम साम्राज्य बन गया।[8]

तुगलक वंश को वास्तुकला संरक्षण के लिए याद किया जाता है, जैसे पुरानी लाटें (खम्भे, बाए चित्र में).[42] जो कि हिन्दू, बौद्ध जनित तीसरी शताब्दी से थी, सल्तनत ने इसका उपयोग मस्जिद की मीनारों के लिए किया। फिरोज शाह ने इन मीनारों को मस्जिदों के पास स्थापित कराया। इस खम्भे (दायाँ) में ब्रम्ही लिपि में अंकित अक्षरों का अर्थ फिरोज शाह के समय किसी को नहीं पता था।[43] १८३७ में; अंकित अक्षरों का अर्थ जेम्स प्रिंसेप ने ४८० साल बाद पता लगया, इस खम्भे पर सम्राट अशोक द्वारा लिखा गया है।[44]

मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु 1351 में गुजरात के उन लोगों को पकड़ने के दौरान हो गई, जिन्होंने दिल्ली सल्तनत के खिलाफ बगावत की थी।[39] उसका उत्तराधिकारी फिरोज शाह तुगलक (1351-1388) था, जिसने अपने सम्राज्य की पुरानी क्षेत्र को पाने के लिए 1359 में बंगाल के खिलाफ 11 महीनें का युद्ध आरम्भ किया। परन्तु फिर भी बंगाल दिल्ली सल्तनत में शामिल न हो पाया। फिरोज शाह तुगलक ने 37 वर्षों तक शासन किया। उसने अपने राज्य में खाद्य पदार्थ की आपूर्ति के लिए व अकालों को रोकने के लिए यमुना नदी से एक सिंचाई हेतु नहर बनवाई। एक शिक्षित सुल्तान के रूप में, उसने अपना एक संस्मरण लिखा।[45] इस संस्मरण में उसने लिखा कि उसने अपने पूर्ववर्तियों के उलट, अपने राज में यातना देना बंद कर दिया है। यातना जैसे कि अंग-विच्छेदन, आँखे निकाल लेना, जिन्दा व्यक्ति का शरीर चीर देना, रीढ़ की हड्डी तोड़ देना, गले में पिघला हुआ सीसा डालना, व्यक्ति को जिन्दा फूँक देना आदि शामिल था।[46] इस सुन्नी सुल्तान यह भी लिखा है[16,17] कि वह सुन्नी समुदाय का धर्मान्तरण को सहन नहीं करता था, न ही उसे वह प्रयास सहन थे जिसमे हिन्दू अपने ध्वस्त मंदिरों को पुनः बनाये।[47] उसने लिखा है कि दंड के तौर पर बहुत से शिया, महदी और हिंदुओं को मृत्युदंड सुनाया। अपने संस्मरण में, उसने अपनी उपलब्धि के रूप में लिखा है कि उसने बहुत से हिंदुओं को

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

सुन्नी इस्लाम धर्म में दीक्षित किया और उन्हें जजिया कर व अन्य करों से मुक्ति प्रदान की, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार किया उनका उसने भव्य स्वागत किया। इसके साथ ही, उसने सभी तीनों स्तरों पर करों व जजिया को बढ़ाकर अपने पूर्ववर्तियों के उस फैसले पर रोक लगा दिया जिन्होंने हिन्दू ब्राह्मणों को जजिया कर से मुक्ति दी थी।[46][48] उसने व्यापक स्तर पर अपने अमीरों व गुलामों की भर्ती की। फिरोज शाह के राज के यातना में कमी तथा समाज के कुछ वर्गों के साथ किए जा रहे पक्षपात के खत्म करने के रूप में देखा गया, परन्तु समाज के कुछ वर्गों के प्रति असहिष्णुता और उत्पीड़न में बढ़ोत्तरी भी हुई।[46]

फिरोज शाह के मृत्यु ने अराजकता और विघटन को जन्म दिया। इस राज के दो अंतिम शासक थे, दोनों ने अपने सुल्तान घोषित किया और 1394-1397 तक शासन किया। जिनमे से एक महमूद तुगलक था जो कि फिरोज शाह तुगलक का बड़ा पुत्र था, उसने दिल्ली से शासन किया। दूसरा नुसरत शाह था, जो कि फिरोज शाह तुगलक का ही रिश्तेदार था, ने फिरोजाबाद पर शासन किया।[49] दोनों सम्बन्धियों के बीच युद्ध तब तक चलता रहा जब तक तैमूर लंग का 1398 में भारत पर आक्रमण नहीं हुआ। तैमूर, जिसे पश्चिमी साहित्य में तैम्बुरलेन भी कहा जाता है, समरकंद का एक तुर्क सम्राट था। उसे दिल्ली में सुल्तानों के बीच चल रही जंग के बारे में जानकारी थी। इसलिए उसने एक सुनियोजित ढंग से दिल्ली की ओर कूच किया। उसके कूच के दौरान १ लाख से २ लाख के बीच हिन्दू मारे गए।[50][51][52] तैमूर का भारत पर शासन करने का उद्देश्य नहीं था। उसने दिल्ली को जमकर लूटा और पूरे शहर को में आग के हवाले कर दिया। पाँच दिनों तक, उसकी सेना ने भयंकर नरसंहार किया।[33] इस दौरान उसने भारी मात्रा में सम्पति, गुलाम व औरतों को एकत्र किया और समरकंद वापस लौट गया। पूरे दिल्ली सल्तनत में अराजकता और महामारी फैल गई।[49] सुल्तान महमूद तुगलक तैमूर के आक्रमण के समय गुजरात भाग गया। आक्रमण के बाद वह फिर से वापस आया तुगलक वंश का अंतिम शासक हुआ और कई गुटों के हाथों की कठपुतली बना रहा।[33][53]

सैयद वंश
शासन काल 1414 से 1451 तक (३६ वर्ष) सैयद वंश एक तुर्क राजवंश था [70] जिसने दिल्ली सल्तनत पर 1415 से 1451 तक शासन किया। [22] टमुरुद पर आक्रमण और लूटने दिल्ली सल्तनत को बदमाशों में छोड़ दिया था, और सैयद वंश के शासन के बारे में बहुत कम जानकारी है। एन्निमरी शिममेल, राजवंश के पहले शासक को खज़्र खान के रूप में नोट करता है, जिन्होंने टिमूर का प्रतिनिधित्व करने का दावा करके शक्ति ग्रहण की थी दिल्ली के पास के लोगों ने भी उनके अधिकार पर सवाल उठाए थे उनका उत्तराधिकारी मुबारक खान था, जिन्होंने खुद को मुबारक शाह के रूप में नाम दिया और पंजाब के खो राज्यों को फिर से हासिल करने की कोशिश की, असफल। [69]

सईद वंश की शक्ति के साथ, भारतीय उपमहाद्वीप पर इस्लाम के इतिहास में गहरा परिवर्तन हुआ, शमीमल के अनुसार। [6 9] इस्लाम का पहले प्रमुख सुन्नी संप्रदाय पतला था, शिया गुलाब जैसे वैकल्पिक मुस्लिम संप्रदायों, और इस्लामी संस्कृति के नए प्रतिस्पर्धा केन्द्रों ने दिल्ली से परे जड़ें निकालीं।

सैयद वंश को 1451 में लोदी राजवंश द्वारा विस्थापित किया गया था।[18,19]

लोदी वंश
शासन काल 1451 से 1526 तक (७६ वर्ष)
लोदी वंश अफगान लोदी जनजाति का था। [70] बहलोल खान लोदी ने लोदी वंश को शुरू किया और दिल्ली सल्तनत पर शासन करने वाला पहला पश्तून था। [71] बहलोल लोदी ने अपना शासन शुरू किया कि दिल्ली सल्तनत के प्रभाव का विस्तार करने के लिए मुस्लिम जौनपुर सल्तनत पर हमला करके, और एक संधि के द्वारा आंशिक रूप से सफल हुए। इसके बाद, दिल्ली से वाराणसी (फिर बंगाल प्रांत की सीमा पर) का क्षेत्र वापस दिल्ली सल्तनत के प्रभाव में था।

बहलुल लोदी की मृत्यु के बाद, उनके बेटे निजाम खान ने सत्ता संभाली, खुद को सिकंदर लोदी के रूप में पुनः नामित किया और 14 9 8 से 1517 तक शासन किया। [72] राजवंश के बेहतर ज्ञात शासकों में से एक, सिकंदर लोदी ने अपने भाई बारबक शाह को जौनपुर से निष्कासित कर दिया, अपने बेटे जलाल खान को शासक के रूप में स्थापित किया, फिर पूर्व में बिहार पर दावा करने के लिए चलाया। बिहार के मुस्लिम गवर्नर्स ने श्रद्धांजलि और करों का भुगतान करने पर सहमति व्यक्त की, लेकिन दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र संचालित। सिकंदर लोदी ने मंदिरों का विनाश करने का अभियान चलाया, विशेषकर मथुरा के आसपास। उन्होंने अपनी राजधानी और अदालत को दिल्ली से आगरा तक ले जाया, [73] [उद्धरण वांछित] एक प्राचीन हिंदू शहर जिसे लुप्त और दिल्ली सल्तनत काल की शुरुआत के दौरान हमला किया गया था। इस प्रकार सिकंदर ने अपने शासन के दौरान आगरा में भारत-इस्लामी वास्तुकला के साथ इमारतों की स्थापना की, और दिल्ली सल्तनत के अंत के बाद, आगरा का विकास मुगल साम्राज्य के दौरान जारी रहा। [71] [74]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54||Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 7, July 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0607046 |

IV. निष्कर्ष

सिकंदर लोदी की मृत्यु 1517 में एक प्राकृतिक मौत हुई, और उनके दूसरे पुत्र इब्राहिम लोदी ने सत्ता ग्रहण की। इब्राहिम को अफगान और फारसी प्रतिष्ठित या क्षेत्रीय प्रमुखों का समर्थन नहीं मिला। [75] इब्राहिम ने अपने बड़े भाई जलाल खान पर हमला किया और उनकी हत्या कर दी, जिन्हें उनके पिता ने जौनपुर के गवर्नर के रूप में स्थापित किया था और अमीरों और प्रमुखों का समर्थन किया था। [71] इब्राहिम लोदी अपनी शक्ति को मजबूत करने में असमर्थ थे, और जलाल खान की मृत्यु के बाद, पंजाब के राज्यपाल, दौलत खान लोदी, मुगल बाबर तक पहुंच गए और उन्हें दिल्ली सल्तनत पर हमला करने के लिए आमंत्रित किया। [73] 1526 में बाबर ने पानीपत की लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराया और मार डाला। इब्राहिम लोदी की मृत्यु ने दिल्ली सल्तनत को समाप्त कर दिया और मुगल साम्राज्य ने इसे जगह दी।[20]

संदर्भ

1. "Arabic and Persian Epigraphical Studies - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण". Asi.nic.in. मूल से 29 सितंबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2010-11-14.
2. ↑ पीटर जैक्सन, The Delhi Sultanate: A Political and Military History Archived 2014-10-26 at the वेबैक मशीन, (2003), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस. p.28. ISBN 0521543290
3. ↑ प्रदीप बरुआ The State at War in South Asia, ISBN 978-0803213449, पृष्ठ 29-30
4. ↑ रिचर्ड ईटन (2000), Temple Desecration and Indo-Muslim States Archived 2015-09-20 at the वेबैक मशीन, Journal of Islamic Studies, 11(3), pp 283-319
5. ↑ A. Welch, "Architectural Patronage and the Past: The Tughluq Sultans of India," Muqarnas 10, 1993, ब्रिल पब्लिशर, पृष्ठ 311-322
6. ↑ जे. ए. पेज, Guide to the Qutb Archived 2014-07-27 at the वेबैक मशीन, Delhi, Calcutta, 1927, पृष्ठ 2-7
7. ↑ Bowering et al., The Princeton Encyclopedia of Islamic Political Thought, ISBN 978-0691134840, प्रिंसटन विश्विद्यालय प्रेस
8. ↑ देखें:
    a. M. Reza Pirbha, Reconsidering Islam in a South Asian Context, ISBN 978-9004177581, Brill
    b. Richards J. F. (1974), The Islamic frontier in the east: Expansion into South Asia, Journal of South Asian Studies, 4(1), pp. 91-109
    c. Sookoohy M., Bhadreswar - Oldest Islamic Monuments in India, ISBN 978-9004083417, Brill Academic; see discussion of earliest raids in Gujarat
9. ↑ Peter Jackson (2003), The Delhi Sultanate: A Political and Military History, Cambridge University Press, ISBN 978-0521543293, pp 3-30
10. ↑ T. A. Heathcote, The Military in British India: The Development of British Forces in South Asia:1600-1947, (Manchester University Press, 1995), pp 5-7
11. ↑ Barnett, Lionel (1999), Antiquities of India: An Account of the History and Culture of Ancient Hindustan, p. 1, गूगल बुक्स पर, Atlantic pp. 73–79
12. ↑ Richard Davis (1994), Three styles in looting India, History and Anthropology, 6(4), pp 293-317, doi:10.1080/02757206.1994.9960832
13. ↑ MUHAMMAD B. SAM Mu'izz AL-DIN, T.W. Haig, Encyclopaedia of Islam, Vol. VII, ed. C.E.Bosworth, E.van Donzel, W.P. Heinrichs and C. Pellat, (Brill, 1993)
14. ↑ C.E. Bosworth, The Cambridge History of Iran, Vol. 5, ed. J. A. Boyle, John Andrew Boyle, (Cambridge University Press, 1968), pp 161-170
15. ↑ History of South Asia: A Chronological Outline Archived 2013-12-11 at the वेबैक मशीन Columbia University (2010)
16. ↑ Muʿizz al-Dīn Muḥammad ibn Sām Archived 2012-11-20 at the वेबैक मशीन Encyclopedia Britannica (2011)
17. ↑ ब्रुस आर. गोर्डोन. "Nomads of the Steppe". My.raex.com. मूल से 20 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2012-01-20.
18. ↑ जैक्सन पी. (1990), The Mamlūk institution in early Muslim India, Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain & Ireland (New Series), 122(02), pp 340-358
19. ↑ सी.ई. बोसवर्थ, The New Islamic Dynasties, Columbia University Press (1996)
20. ↑ Barnett & Haig (1926), A review of History of Mediaeval India, from ad 647 to the Mughal Conquest - Ishwari Prasad, Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain & Ireland (New Series), 58(04), pp 780-783

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor

7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com